संवाद

बच्चों की शिक्षा में अध्यापक के साथ-साथ अभिभावकों की भी अहम भूमिका होती है। बच्चों की शिक्षा को सार्थक और बेहतर रूप देने के लिए ज़रूरी है, परिवार और विद्यालय में तालमेल होना। इसके लिए ज़रूरी है कि माता-पिता तथा शिक्षक बच्चों को अच्छी तरह से समझें, उनके मित्र बनें, उनके आदर्श बनें तथा बच्चों के लिए एक खुशनुमा माहौल बनाएँ। पत्रिका की शुरुआत 'शिक्षा और अभिभावकों का दायित्व' नामक लेख से की गयी है। शिक्षा की भूमिका सामाजिक बदलाव व समतावादी व्यवस्था लाने वाली होनी चाहिए, इसी की चर्चा 'वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा का अधिकार और सामाजिक-आर्थिक बदलाव की संभावना — एक आलोचनात्मक विमर्श' लेख में की गयी है।

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को इस बात के लिए सक्षम बनाएँ कि वे बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप कक्षायी अनुभव आयोजित करें, ताकि सभी बच्चों को अवसर मिल पाएँ। शिक्षण का वास्तविक उद्देश्य बच्चे के सीखने की सहज इच्छा और युक्तियों को समृद्ध करना होना चाहिए। लेख 'नई दुनिया के लिए 'तालीम', जो गांधी की नई तालीम के सिद्धांत पर संचालित, आनंद निकेतन विद्यालय के अभ्यासों द्वारा, नई तालीम के शिक्षण शास्त्रीय पक्ष को उजागर करता है। 'शिक्षागत निवेश बनाम क्षमताओं का विकास' लेख में यह स्पष्ट किया गया है कि बच्चों की क्षमताओं का विकास करने हेतु प्राथमिक स्तर पर शिक्षागत निवेश करना आवश्यक है। एक अन्य लेख 'शिक्षण-अधिगम प्रकिया में शिक्षण-अधिगम विधि एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री की महत्ता (क्रियात्मक शोध)' में सेवाकालीन शिक्षकों व प्रशिक्षार्थी शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में उनकी भूमिका से उन्हें अवगत कराने का प्रयास किया गया है। 'उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की रूपरेखा' नामक लेख में सामाजिक विज्ञान विषय में रोचकता एवं गुणवत्ता लाने हेतु सुझाव दिए गए हैं।

कई बार देखा गया है कि शिक्षक को एक ही समय पर एक साथ दो या दो से अधिक कक्षाओं को पढ़ाना पड़ता है। यह परिस्थिति हमारे देश में प्राथमिक स्तर पर आम रूप से देखने को मिलती है। लेख 'बहुकक्षीय शिक्षण की चुनौतियाँ — तेलंगाना राज्य के शिक्षकों के अनुभव' में तेलंगाना राज्य के शिक्षकों के अनुभव साझा किए गए हैं, जो आपके लिए बहुत उपयोगी हो सकते हैं।

राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महात्मा गांधी के जीवन और कार्यों के विषय में कई किताबें लिखी गयी हैं। अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों में जहाँ भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का ज़िक्र आता है, वहाँ महात्मा गांधी का उल्लेख विशेष रूप से मिलता है, जोकि बहुत ही प्रसंशनीय है। लेख 'अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में महात्मा गांधी का वर्णन' में कुछ अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों का विश्लेषण किया गया।

बाल्यावस्था, जीवन की सर्वाधिक संवेदनशील अवस्था है। इस अवस्था में बच्चा तीव्रगति से सीखता है। पत्रिका में शामिल लेख 'संज्ञानात्मक विकास की अवधारणा' इस बात की प्रतिपुष्टि करता है कि बच्चे के जीवन के आरंभिक छह वर्ष विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं और इस आयु में बच्चों में संज्ञानात्मक विकास तीव्रता से होता है। शोध इस बात को भी सत्यापित करते हैं कि मस्तिष्क का विकास स्वास्थ्य, भोजन एवं देखभाल की गुणवत्ता पर निर्भर होने के साथ-साथ मनोसामाजिक वातावरण की गुणवत्ता पर भी निर्भर करता है। आज शिक्षा के साझेदारों (माता-पिता, समुदाय, अधिकारी आदि) को भी जागरूक करने की आवश्यकता है। पढ़ना सीखने में अनेक कौशलों का समावेश है, जैसे — अपने निकट पर्यावरण में उपलब्ध वस्तुओं एवं व्यक्तियों के विषय में बात कर पाना, ध्यानपूर्वक सुनकर ध्वनियों को पहचानना एवं शब्दों के अर्थ समझ पाना, अवलोकन कर चित्रों में दी गई जानकारी के साथ संबंध स्थापित करना आदि। 'प्राथमिक स्तर के बच्चों में पढ़ने की प्रवृत्ति — एक दृष्टिकोण' लेख में इन सभी कौशलों के प्रयोग के लिए बच्चों को अनेक अवसर प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। 'पूर्व प्राथमिक स्तर पर कार्य पत्रिकाओं का प्रयोग — एक प्रयास' लेख में वर्कशीट्स की उपयोगिता के बारे में चर्चा की गई है। साथ ही कुछ वर्कशीट्स उदाहरणार्थ दी गई हैं, जो शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

प्रस्तुत अंक में 'विशेष' के अंतर्गत 'उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा सीखने के प्रतिफल', सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सहित दिया जा रहा है, जिन्हें पढ़कर आप प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा को सीखने के संकेतक जान सकते हैं और उनकी संप्राप्ति भी कर सकते हैं।

आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

अकादमिक संपादक